कमलेश्वर जी के हिन्दी कथा साहित्य में उल्लेखित मानवीय संबंधों का अध्ययन

रंजीत कुमार तिवारी (शोध छात्र) डा0 धनेश कुमार मीना (शोध निर्देशक)

विषय हिन्दी कला विभाग मंगलायतन विश्वविद्यालय बेंसबा अलीगढ

सारांश, मानवीय संबंधों के विषय वस्तु के बारे में जान लेना आवश्यक है अगर हम शोध विषय वस्तु से अलग बात करें तो मनुष्य का जीवन ब्रह्मांड के चर अचर सभी विषयों से संबंधित है अनादिकाल से अब तक मनुष्य का जुड़ाव किसी ने किसी रूप से संसार की सभी वस्तुओं से रहा है पूर्व में मनुष्य का जीवन आज की स्थिति से उलट अत्यंत जटिल संभावनाओं में पलता था किंतु मनुष्य सर्वाधिक बौद्धिक प्राणी होने के नाते धीरे–धीरे अपने स्वभाव अनुसार आवश्यकताओं के अनुरूप संबंध स्थापित करने लगा।''वसुधैव कुटुंबकम'' मनुष्य के सबसे आदर्श विचारों में प्रधानता भूमि के सभी लोगों को एक परिवार की तरह रहने की परंपरा रही है लेकिन अब अभाव या हम की सत्ता के कारण एकल परिवार की कल्पना साकार करने में विश्व लगा है यही मनुष्य के मुख्य धारा में देखने को मिल रहा है। अरस्तु के शब्दों में ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होता है।'' इस उदाहरण का आशय है कि मनुष्य का जन्म किसी न किसी परिवार में ही होता है जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव परिवार समाज,संपूर्ण राष्ट्र एवं समुचित विश्व की परिकल्पना के रूप में प्रभाव विद्यमान है। मनुष्य संसार की प्रदत्त वस्तुओं के साथ अपने जीवन को स्थापित करते हुए अपने जीवन शैली के संवर्धन हेतु नित्य नई संभावनाओं को यथार्थ रूप में परिणित करने में लगा रहता है। किसी भी विषय वस्तु की समीक्षा करने के लिए विभिन्न माध्यमों, विभिन्न उदाहरणों की आवश्यकता होती है जिनका समावेश करना अत्यंत ही आवश्यक होता है। हम प्रकृति के द्वारा दिए हुए जीव जंतुओं में यदि चींटी की बात करें तो चींटी एक सूचक जीव होते हुए भी मनुष्य को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य करती है जिनका संबंध गुरु के मार्गदर्शन से कम नहीं है। मनुष्य का बच्चों के रूप में जब भी जन्म होता है उसी समय से मानवीय संबंधों से जुड़ जाता है। प्रथमता परिवार, समाज एवं राष्ट्र हित में अपने को योगदान देने में प्रयत्नरत रहता है।

मुख्य शब्द, साहित्यिक, आतमकथा, सामाजिक रूपरेखा, उपन्यासकार, दर्शनिक विचार आदि।

प्रस्तावना, मानवीय जीवन की कल्पना तभी सरकार होती है जब व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास सकारात्मक दिशा में करता है और उस समाज और राष्ट्र का हित होता है यही प्रमाणित करता है कि उसे मनुष्य का अस्तित्व परिवार समाज और राष्ट्रहित में है। समाज में मानव द्वारा निर्मित या बनाए गए रीति–रिवाज रहन–सहन पारिवारिक एवं सामाजिक रूपरेखा इत्यादि कृत्रिम मानवीय संबंधों को दर्शाते हैं मनुष्य के स्वभाव में किन्हीं कारणवश जो व्यवहार परिवर्तन होते हैं वह भी मानव के सीखने का ही

परिणाम होता है जो एक दर्शनिक विचारों को जन्म देता है संस्कृति विकसित होती है। मानव समाज में सुख–दुख अवश्य रहेगा क्योंकि यह तो प्रकृति कड़क है जिसका कृत्रिम या भौतिक जीवन से संबंध लाजमी है। अतः कमलेश्वर जी भी एक संवेदना पूर्ण भावनाओं के धनी और सामाजिक रूपों से गहराइयों के बारे में सूचना उत्तम समझ रखने वाले कथाकार उपन्यासकार पत्रकार दूरदर्शन एवं अन्य विधाओं पर भी जोरदार पकड़ रखने वाले मर्मज्ञ की श्रेणी में आते हैं।"एक समय था जब पेड़ इंसानों के घरों को धूप और हवा से बचाते थे। अब, पेड़ों को ऊंची कंक्रीट की इमारतों की छाया में उगने की आदत हो गई है।" – कमलेश्वर कितने पाकिस्तान

कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना एक सफलतम उपन्यास लेखक की उत्कृष्ट श्रेणी के रूप में जाने जाते हैं इसके साथ ही साथ कहानी लेखन में भी सिद्व हस्त थे, जिनकी कहानियां अत्यंत ख्याति प्राप्त हुई इन्होने साहित्य की पराकाष्ठा को आत्मसात करते हुए तत्कालीन समाज पर गंभीर प्रभाव छोड़ा ।

हिंदी साहित्य को नवीन मोड़ या यूँ कहें की नया दृष्टि देने का अद्वितीय प्रयास कमलेश्वर ने किया नई कहानी आंदोलन को भी सफल बनाने में उनका योगदान रहा इनके कहानियों में ग्रामीण परिवेश, कस्बाई जीवन की स्थिति एवं शहरी संस्कृति का अनोखा समावेश क्रमबद्धता से पढ़ने को मिलता है वैसे इनके कहानियों का मूलबिंदु जीवन के प्रति प्रतिबद्धता और यथार्थ का आग्रह मौलिकतापूर्ण देखने को मिलता है। कमलेश्वर जी के व्यक्तित्व के बारे में ''हंस'' पत्रिका के संपादक ''राजेंद्र यादव, दुष्यंत कुमार...जी कहते हैं –''कमलेश्वर का जाना मेरे लिए हवा पानी छिन जाना जैसा है, साहित्य जगत में कमलेश्वर जैसे बहुमुखी और करिश्माई व्यक्तित्व के लोग कम ही हुए।

जैसा कि कमलेश्वर के कथा साहित्य में मानवीय संबंधों का समीक्षात्मक अध्ययन करना है इस विषय वस्तु में समीक्षात्मक शब्द का तात्पर्य एवं प्रयोग का उद्देश्य भी जान लेना सार्थक होगा। समीक्षा़त्मक. तीन प्रमुख पदों के योग से बना है। लिए एक–एक शब्द का अर्थ समझते हैं –समीक्षा शब्द का संधि विच्छेद सम ईक्षा (सम उपसर्ग का अर्थ एकत्रित करना या जुड़ना तथा ईक्षा का अर्थ दृष्टि विचार या दर्शन होता है।) आत्म– आत्मा का अर्थ आत्मा या मन से संबंधित या अपना दूसरा जो कि सामान्य अर्थ स्वयं इसका भावार्थ प्रत्यक्षीकरण या अनुभव एक्सपीरियंस से है। अर्थात बाह्य पदार्थों से अलग एवं निजी चेतन सत्ता (जैसे आत्म चेतना आत्म पुरुष आदि) अक प्रत्यय – यह ऐसा प्रत्यय है जो किसी शब्द के पीछे या बाद में जुड़कर करता रूप में परिवर्तित कर देता है अर्थात कार्य करने वाला(स्वयं कर्ता बनाने का कार्य इस प्रत्यय का होता है।) समीक्षात्मक शब्द का भाव विश्लेषण करने से मुख्य उद्देश्य की प्राप्ति हो जाएगी। समीक्षात्मक प्रक्रिया एक अनुभाविक सैद्धांतिक और दार्शनिक विचारधारा का विषय वस्तु है जिससे हम किसी साहित्य या अन्य विषयों के गुण दोष जांच पड़ताल या खोजबीन पूर्वक एक सार्थक

तथ्यों का पता लगाते हैं जिससे शोध कार्य की विश्वसनीयता निरंतर बनी रहती है यहां समीक्षा उद्देश्य यह है कि मानवीय संबंधों की पराकाष्ठा को जानना। कमलेश्वर जी 20वीं सदी के महान कथाकार एवं पत्रकार हैं इनके कथा साहित्य (कहानी, उपन्यास,पत्रकारिता, दूरदर्शन एवं अन्य कथायें) का समीक्षात्मक मानवीय संबंधों का अध्ययन करना समाहित है जिसका विषय वस्तु के अनुरूप आगे अध्ययन विश्लेषण किया जाएगा। कमलेश्वर हिंदी साहित्य के एक छोटे मगर महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उनकी रचनाओं में मानवीय संवेदना एक प्रमुख सूत्र है जो उनकी कहानियाँ, कविताओं और निबंधों को एक अलग ही गहराई और समृद्धि देती है। कमलेश्वर की रचनाएँ आज भी प्रस्तुत हैं और उनकी मानवीय संवेदना आज के पाठकों को भी प्रेरित करती है। उनकी कहानियाँ और कविताएँ हम मानव जीवन की जटिलताओं और सुंदरताओं को समझने में मदद करती हैं। कमलेश्वर हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। कमलेश्वर अपनी रचनाओं में आम आदमी के जीवन और संघर्षों को छूते हैं। उनकी कहानियाँ और कविताएँ गरीबी, भूख, असमानता और अन्य जैसे विषयों पर दृष्टि डालती हैं। कमलेश्वर सिर्फ बाहरी दुनिया का चित्र नहीं बनाते, बालक मानवी मन के अंदर छुपे सूक्ष्म विचार और भावनाओं को भी सामने लाते हैं। उनकी रचनाओं में एकस्मिता, अलगाव, प्रेम, खोज और नए अस्तित्व की इच्छा जैसी भावनाओं का प्रभावशाली अनुभव होता है। कमलेश्वर की शैली भाषा की समृद्धि और सरलता के लिए जानी जाती है। वे ऐसे शब्द चुनते हैं जो उनके पत्रों की भावनाओं और अवस्थाओं को स्पष्ट रूप से समझते हैं। उनकी कहानियों में कई बार एक महाकाव्य भाषा का प्रयोग भी होता है जो उनकी रचनाओं में यथार्थवाद और प्रभावशाली बनता है। कमलेश्वर अपने समय के सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों से भी अवगत थे और उनकी रचनाओं में उनकी आलोचना भी करते थे। उन्हें सरकार की नीतियां, सामाजिक संबंध और वर्ग भेद जैसे विषयों पर भी लिखा है।

कमलेश्वर जी का व्यक्तित्व एवं कृतिव, कमलेश्वर हिंदी साहित्य के एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। उनकी रचनाओं ने भारतीय साहित्य को समृद्ध किया और आने वाली कई पीढ़ियों के लेखकों को प्रेरित किया, कमलेश्वर के कथा साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का उल्लेख प्रायः देखने को मिल ही जाती है। संवेदना के केन्द्र में मनुष्य का आना स्वाभाविक है, क्योंकि मनुष्य समुदाय सर्वाधिक समझदार प्राणी है। कमलेश्वर की कहानियों, उपन्यासो तथा अन्य विद्यवाओं में संवेदना की प्रधान भूमिका रहती है। संवेदनाएँ किसी भी रचना अथवा कृतित्व को जीवंत बनाती हैं। कमलेश्वर के व्यक्तित्व में मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति भरपूर मिलता है। कमलेश्वर के स्वयं का जीवन संघर्षमय था। संघर्ष की उत्पत्ति मानवीय विचारों और संवेदनाओं की ही उपज होती हैं। यह भावना हर घर, समाज के लोगों में कभी परंपरा के रूप में तो कभी आधुनिक प्रभाव के रूप में सदा से द्रष्टव्य है इनके स्वयं के सोच में जिज्ञासा की अचरज लालसा थी। ये जीवन में सदैव खुद को आगे बढ़ने से कभी नहीं रोकें। इनमें इन्हीं गुणों के कारण शानदार स्क्रिप्ट्स और संवाद लिखने में अद्वितीय सफलता प्राप्त की है। इन्होंने लेखन कला में ऐसी प्रवीण कुशलता हासिल की थी, इनके संवाद लेखन में संवेदनाओं की प्रचुरत उमड़

पड़ती। मानवीय संवेदना का उद्देश्य होगा कि जो हम स्वयं में विचार करते हैं वही दूसरों में भी विचार करें और हानि लाभ की परिस्थितियों से परिचित हो सके। इस शोध हेतु कमलेश्वर जी एवं उनके परिवार के बारे में निम्नानुसार अध्ययन किया गया है।

- जन्म
- माता – पिता
- विवाह
- बचपन
- शिक्षा – दीक्षा
- परिवेश
- मृत्यु
- कमलेश्वर के मित्र
- व्यक्तित्व
- व्यक्तित्व की विशेषताएं
- पारिवारिक एवं सामाजिक स्थिति
- मित्रों का प्रभाव और व्यवहार कुशलता
- नयी कहानी और कमलेश्वर
- कृतियां तथा कार्यक्षेत्र
- कमलेश्वर के कथा यात्रा का दौर

व काल क्रम : १९५२ – १९५९ तक (पहला दौर) मैनपुरी –इलाहाबाद

व काल क्रम : १९५९ – १९६६ तक (दूसरा दौर) दिल्ली

व काल क्रम : १९६६ – १९७२ तक (तीसरा दौर) मुंबई

- कहानीकार के रूप में कमलेश्वर
- कमलेश्वर के प्रमुख कहानी संग्रह
- उपन्यासकार के रूप में कमलेश्वर
- कमलेश्वर के प्रमुख उपन्यास
- नाटककार के रूप में कमलेश्वर
- कमलेश्वर के नाटक
- संस्मरण कार के रूप में कमलेश्वर

व कमलेश्वर के संस्मरण साहित्य

व कमलेश्वर के यात्रा संस्मरण

- आत्मकथाकार के रूप में कमलेश्वर

व जो मैंने जिया

व यादों के चिराग

व जलती हुई नदी

- कमलेश्वर के द्वारा लिखी फिल्म के नाम
- फिल्मकार एवं स्तंभलेखक के रूप में कमलेश्वर
- पत्रकार एवं संपादक के रूप में कमलेश्वर
- कमलेश्वर के द्वारा सम्पादित पत्र पत्रिकाएं
- दूरदर्शन प्रसारण के रूप में कमलेश्वर
- अन्य जानकारी
- पुरस्कार एवं योगदान

कमलेश्वर का पूरा नाम 'कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना' है। ये अन्य उपनामों से भी लिखते थे– कभी "विप्रगोस्वामी"तो कभी "हरिश्चंद्र", तो कभी "सौमित्र गोस्वामी", तो कभी "पर्यवेक्षक" लेकिन हिंदी साहित्य जगत में उन्हें "कमलेश्वर के नाम से ही ख्याति मिली है इनका जन्म 6 जनवरी 1932 को जिला – मैनपुरी, उत्तर प्रदेश में हुआ। भले ही इनका जन्म 19वीं शदी में हुआ लेकिन वह 5000 वर्षों की अपनी संस्कृति को जोड़ना नही भूलते, जो भारतीय महाद्वीप के सभ्यताओं, कलाओं इत्यादि में लगातार प्रवाहमान रही है। कमलेश्वर की माता का नाम 'शांति देवी'तथा पिताजी का नाम 'जगदंबा प्रसाद' था। इनके पिता की दो शादी हुई थी। कमलेश्वर जब 3 वर्ष के थे तभी इनके पिता की ह्रदय गति के रुक जाने से मृत्यु हो गई। उसे समय कमलेश्वर आयु मात्र 3 वर्ष थी। इन्हें अपने पिताजी का चेहरा याद भी नहीं था ऐसा स्रोतों से पता चलता है। यह कुल सात भाई थे। इनके बड़े भाई का नाम 'सिद्धार्थ' था। कमलेश्वर जी स्वयं सबसे छोटे थे। दैवगति के कारण उनके पांच भाइयों की मृत्यु भी हो गई। अब पिता के बाद उनके बड़े भाई सिद्धार्थ ही जिम्मेदारी का निर्वहन कर रहे थे। कुछ ही समय बाद अल्पायु में बड़े भाई सिद्धार्थ की भी मृत्यु हो गई। जिस अपार क्षति की भरपाई कभी नहीं हो सकती थी। इस आपदा को झेलना पाना सामान्य मनुष्य के वश में नहीं था। इस स्थिति को विराट ह्रदय वाला ही संभाल सकता था। इन्हें बचपन से ही जिम्मेदारियां स्वतः ही मिल गई। उनकी दूसरी मां से भी एक लड़का था, जिसकी देखभाल उनकी माताजी इनसे अधिक करती थी। जिसके सर से पिता का साया उठ जाता है उसे कितनी मुसीबत का सामना करना पड़ता है यह जग जानता है घोर संकट की घड़ी में सिर्फ ईश्वर ही एक मात्र सहारा थे। इन्हें आंतरिक और ईश्वरीय प्रेरणा प्राप्त होती गई और इन्होंने अपने परिवार का पालन करते गए। कमलेश्वर ने अपनी परिस्थितियों से भरपूर अनुभव

ग्रहण किया। इन्होंने असहनीय पीड़ा को अपना ढाल बना लिया आगे चलकर इनकी कहानियों में उनके जीवन के अनुभव जुड़ते गए और इनके लेखन में चमत्कार आता गया। इस संदर्भ में उनका स्वयं का कथन प्रसिद्ध है। "बच्चा होते हुए भी वयस्कों की तरह निर्णय ले सकने की आदत नहीं मजबूरी बन गई।"

कमलेश्वर का विवाह : – इनकी शादी सन् 1958 में उत्तर–प्रदेश के फतेहगढ़ नामक स्थान में हुआ। उनकी पत्नी का नाम 'गायत्री' था। इस समय उनकी आयु 27 वर्ष थी। इनके जीवन में जो हक मोहन राकेश, दुष्यंत कुमार एवं इनकी मां का था वही अधिकार गायत्री को भी प्राप्त था। उनकी पत्नी में धीरज, समझदारी और आतंरिक शक्ति अद्‌भुत थी। कमलेश्वर की अंतिम अधूरी रचना "अंतिम सफरनामा "उपन्यास है। जिसे कमलेश्वर की पत्नी गायत्री कमलेश्वर के अनुरोध पर "तेजपाल सिंह धामा" ने पूरा किया। जिसे "हिंद पॉकेट बुक्स" ने प्रकाशित किया जो तत्कालीन में बेस्ट सेलर रहा। दो लाइन में तेजपाल सिंह धामा का परिचय देना उचित समझता हूं : तेजपाल सिंह धामा उत्तर प्रदेश के बागपत जिले के खेकड़ा नगर के रहने वाले हैं जिनका जन्म 2 जनवरी 1971 में हुआ था यह 'हिंद पॉकेट बुक्स' के वरिष्ठ संपादक थे इनकी एक रचना 'हमारी विरासत' प्रसिद्ध है, वह मुख्यतः इतिहास पर लिखने वाले साहित्यकार हैं, जो अभी वर्तमान हैं।

गर्दिश के दिन (संस्मरण):– इस संस्मरण में मोहन राकेश, एम. टी. वासुदेवन नायर (मलयालम) कृष्णप्रसाद मिश्र (उड़ीसा), राजेंद्र यादव, शिवप्रसाद सिंह, भीष्म साहनी कृष्णा शोबती, चंद्रकांत बक्षी(गुजराती), हरिशंकर परसाई, किक तौम्बी(उर्दू), राही मासूम रजा, स्वयं कमलेश्वर जी ने इन सबके साथ अपना भी आत्मकथ्य लिखा है। मोहन राकेश के सम्बन्ध में एकदम शुरुआती लाइन से इस संस्मरण का आरम्भ हुआ जिसकी चंद लाइन इस तरह से हैं –''आठ फरवरी सन 1941 ई. में अमृतसर के एक प्रतिष्ठित नागरिक का देहांत हुआ। वह जागरूक तथा कई एक साहित्यिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के पदाधिकारी थे। उनकी मृत्यु के दो एक घंटे बाद उनके आस पास दो तरह का शब्द सुनाई दे रहा था एक शब्द था घर के लोगों के रोने चिल्लाने का, दूसरे का था गला फाड़ फाड़क धमाकियां देने का। धमाकियां देने वाला उस मकान का मालिक था जिसमें वह प्रतिष्ठित नागरिक लगभग पंद्रह वर्ष से रह रहा था। मालिक का किराया कई महीने का बाकी था और वह कह रहा था कि जब तक किराया अदा नहीं किया जाता वह मुर्दा नहीं उठने देगा। आवाज शांत हुई और मृतक की विधवा पत्नी ने अपने सोने का कड़ा जो उतरना ही था उसे मकान मालिक को दे दिया, तब मुर्दा मुक्त हुआ। ये इस संस्मरण के शुरुआत लाइन है। इनके यात्रा संस्मरण इस प्रकार हैं –खंडित यात्राएं, आँखों देख पाकिस्तान,कश्मीर रात के बाद और देश देशांतर आदि हैं। कमलेश्वर जी ने भारत देश के महत्वपूर्ण जगहों में से सबसे अधिक रूचि 'कश्मीर के लिए दिखाई। उन्होंने ''कश्मीर रात के बाद'' यात्रा संस्मरण में कश्मीर के प्रति विशेष लगाव संवेदना दिखाई है।

आँखों देखा पाकिस्तान :– इसमें उनके द्वारा कैदियों के लिए किये गए प्रयत्नों का ''दस्तावेज'' है। इसमें कैदियों द्वारा लिखे गए पत्रों की संवेदना को भी शामिल किया है। इस संस्मरण में इनकी दृढ़ भावनाओं का पता चलता है। कमलेश्वर जी की स्मृति विलक्षण थी।कमलेश्वर जी द्वारा लिखित ''आंखों देखा पाकिस्तान'' कहानी एक मार्मिक और विचारोत्तेजक रचना है। यह कहानी 1980 के दशक में लेखक द्वारा पाकिस्तान यात्रा के अनुभवों पर आधारित है। पाकिस्तान की संस्कृतिऔर समाज का चित्रणः कमलेश्वर जी ने पाकिस्तान के लोगों, उनके रहन–सहन,खान–पानऔर सामाजिक–राजनीतिक परिदृश्य का सजीव चित्रण किया है। भारत–पाकिस्तान विभाजन का दर्दः कहानी मे विभाज के कारण हुए विस्थापन, पीड़ा और लोगों के बीच बन गए तनाव को भी दर्शाया गया है। मानवीयता का संदेशः कहानी में दोनों देशों के लोगों के बीच भाईचारा और मानवता का संदेश भी दिया गया है।

कमलेश्वर, आत्मकथाकार के रूप में, कमलेश्वर बहु ज्ञानी लेखक थे। इन्होंने अपनी पसंद कहानियां तक सीमित न रखकर विभिन्न विधाओं तक अपनी पकड़ बनाई। इन्होंने चर्चित तीन आत्मकथा का भी लेखन किया। इन आत्मकथाओं में अपने जीवन गाथा को तीन भागों में बांटा है–जो मैंने जिया,(1997ई.), यादों के चिराग, जलती हुई नदी। कमलेश्वर की विशेषताओं में यह देखा जाता है कि जितनी सत्यता से दूसरे की बात को वह लेखबद्ध किए हैं उतनी ही अपने बारे में। इन कथाओं में लिखा है कमलेश्वर के बारे में यदि जानना है तो इन आत्मकथाओं को पढ़कर जान सकते हैं।

जो मैंने जिया – इस आत्मकथा के मुख्य पृष्ठ पर कमलेश्वर ने जो लिखा है उसका अंश प्रस्तुत है '' अपनी मौलिक सूझबूझ और नजरिए को लेकर लगातार चर्चित तथा विवादास्पद रहने वाले कमलेश्वर की यादें रोचक हैं और पाठकों को अपने साथ अतीत और भविष्य में ले जाने का माद्दा भी रखते हैं। उम्र की एक खास दहलीज पर पैर रखते ही आदमी को अचानक बीते दिन घेरने लगते हैं। यादों के धुधले अक्स साफ दिखने लगते हैं और बेतहाशा याद आने लगते हैं, वक्त की पिछली गलियों, मोड़ों,चौराहों पर पीछे छूट गए लोग और इन यादों के झरोखे से दिखाई देती हैं, एक पूरी दुनिया हलचलो दोस्ती दुश्मनी आधी शताब्दी के अनेक छोटे–बड़े साहित्यिक कारनामों और इतिहास प्रसंगों से भरी पुरी दुनिया' जो मैंने जिया' में कमलेश्वर की इसी दुनिया का चित्रण है।

यादों के चिराग :– यह उनके आत्मकथा का दूसरा खंड है इसे साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कार भी मिल चुका है इसमें उनके फिल्मी दुनिया के अनुभव संकलित हैं। ''यादों के चिराग'' प्रसिद्ध हिंदी लेख है, दो खंडों में लिखी गई संस्मरणात्मक रचना है। यह न केवल एक आत्मकथा है, बल्कि पिछले 50 वर्षों में हिंदी कथा साहित्य, विशेष रूप से ''नई कहानी'' आंदोलन के विकास का एक वृत्तांत भी है। पहला खंड, जिसका शीर्षक है ''जो मैंने जिया'' (जो मैंने जिया) कमलेश्वर के अपने जीवन के अनुभवों

का विवरण देता है। दूसरा खंड, ''यादों के चिराग ''उनकी साहित्यिक यात्रा पर गहराई से प्रकाश डालता है और हिंदी साहित्य जगत में उनके समकालीनों पर खुलकर विचार प्रस्तुत करत है।

निष्कर्ष, कमलेश्वर का बाल्यावस्था काफी कष्ट में बीता इन्हें जिम्मेदारियों की समझ बचपन में हो गई। इन्हें बहुत तरह के अभाव झेलना पड़ा, इन्हें अपने पिताजी का चेहरा भी ठीक से याद नहीं था, इनके पिता जी का व्यक्तित्व, प्यार–दुलार कैसा था? कमलेश्वर को कुछ नहीं पता। क्योंकि उस समय उनकी उम्र मात्र 3 वर्ष थी। इनके बड़े भाई का सहयोग था किंतु ईश्वर को तो कुछ और ही मंजूर था उसकी भी मृत्यु अल्पायु में हो गई।कमलेश्वर पर मानो पहाड़ टूट पड़ा एक के बाद एक मुसीबत आती गई बस कमलेश्वर के पास संयम, धीरज, आत्म बल ही शेष रह गया जो उसके दुरदिन में उसका साथ दिया। यह एक धनाढ्य परिवार में जन्मे थे किंत समय का चक्र किसने देखा कालचक्र ने कमलेश्व के बचपन में एक तूफान लाया और सब कुछ बालू की भीत की तरह बिखर गया। यह अमीर होते हुए गरीबों की तरह दैनिक जीवन बिताने लगे। अब बचपन के दिनों में वयस्कों जैसे सोचना, कार्य करना ,निर्णय लेना, भविष्य की सोचना इत्यादि। जो एक आम जीवन में होता है उसके लिए भी कठोर परिश्रम करना, बस यही मात्र कार्य बचा जो कि आगे प्रत्येक के लिए डिसीजन (निर्णय) लेना उनकी मजबूरी बन गई, इस तरह कमलेश्वर अभावग्रस्त जीवन यापन करते चले गए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची,

1 हिन्दोस्ता हमारा, कमलेश्वर, भूमिका से

2 कमलेश्वर के बाल नाटक, कमलेश्वर, भूमिका से

3 साहित्य अकादमी, 7 सितंबर 2002, लेखक से भेंट, इंटरनेशनल सेंटर

4 कमलेश्वर, अपनी निगाह में, पृष्ठ सं. 68

4 Shodhganga inflibment

5 हिंदी का गद्य–साहित्य, पृष्ठ 394, लेखक डॉक्टर रामचंद्र तिवारी

6 गर्दिश के दिन ,पृष्ठ संख्या 09, राजपाल एंड संस, कश्मीरी गेट, नई दिल्ली